जुदाई ने मार डाला-1

“अन्तर्वासना के सभी पाठक और पाठिकाओं को मेरा नमस्कार, मैं पिछले चार साल से अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ जिसे पढ़कर मैं रोज मुट्ठ मारता हूँ। मेरा नाम नरेन्द्र है,... [Continue Reading] ...”

Story By: satendra srivastava (satendra.srivastava)
Posted: Thursday, May 15th, 2014
Categories: पड़ोसी
Online version: जुदाई ने मार डाला-1

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

जुदाई ने मार डाला-1

अन्तर्वासना के सभी पाठक और पाठिकाओं को मेरा नमस्कार, मैं पिछले चार साल से अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ जिसे पढ़कर मैं रोज मुट्ठ मारता हूँ।
मेरा नाम नरेन्द्र है, उम्र 20 साल, हाईट 5 फुट 8 इंच और मेरा हथियार का साईज 6 इंच लम्बा और 1.5 इंच मोटा है और मैं देखने मे ठीक-ठाक हूँ और लखनऊ का रहने वाला हूँ।

मैं आपका ज्यादा समय न लेते हुए सीधे मुद्दे पर आता हूँ।
आज से चार साल पहले की बात है, उस समय मेरी इंटर की परीक्षाएँ खत्म हो चुकी थी और मैं और मेरा चचेरा भाई घूमने के लिए अपने जीजा के गाँव गए थे।

चूँकि मैं वहाँ पहली बार गया था इसलिए मैं वहाँ पर किसी को नहीं जानता था। इसलिए मैं ज्यादातर समय अपने दीदी और जीजा के साथ ही बिताता था, जिस कारण मैं दो-तीन दिन में ही बोर हो गया था।
तब हमारी दीदी ने मुझे बताया कि यहीं पास में ही मेरी बुआ का घर है तो मैं एक बार वहाँ अवश्य घूम आऊँ।

अगले दिन मैं और मेरा भाई दोनों लोग साईकल से बुआ के घर जाने के लिए निकल गए और करीब आधे घंटे बाद मैं बुआ के घर पहुंचा और दरवाजा खटखटाया तो दरवाजा किसी लड़की ने खोला।

उसे देखते ही मेरे होश फाख्ता हो गए और पसीने छूटने लगे।
तभी उसकी प्यारी सी आवाज आई- आप कौन ?
मैं बुआ के यहाँ भी पहली बार गया था तो मैं बुआ और फूफा के अलावा किसी को नहीं जानता था।

उसने फिर पूछा- जी आप कौन ?
मैं- म्म्म्म… मैं नरेन्द्र और अअअ आप ?

तब तक मेरी बुआजी आ गईं, तो मैंने उनके पैर छुए और अन्दर गया, अन्दर कमरे में बुआजी की सास यानि दादीजी बैठी थीं तो मैंने उनके पैर छुए और सामान लेकर बुआ के कमरे में चला गया।
तभी फिर वही लड़की हमारे लिए पानी और बिस्किट लाई, टेबल पर जग, गिलास और बिस्किट रखकर वो चली गई।
हमने पानी पिया और आराम करने लगे।

मेरे भाई को नींद आ गई और मैं उसके बारे में ही सोचता रहा।
तभी कमरे में बुआ आईं तो मैंने उनसे उस लड़की के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि यह मेरी ननद है, उसका नाम शालू है और इन्टर में पढ़ती है।
उसके बाद बुआ उठकर चली गईं और मैं छत पर टहलने चला गया।

छत पर जाकर मैंने देखा कि वहाँ मेरी बुआ की दो छोटी लड़कियाँ खेल रही थीं और साथ में मेरी ही हम-उम्र तीन लड़कियाँ और बैठी थीं जिन्हें मैं नहीं जानता था इसलिए मैं चुपचाप एक कोने में जाकर अपने फोन पर ईयर-फोन लगाकर गाने सुनने लगा।

कुछ समय बाद शालू की प्यारी सी आवाज आई- सुनिए !
लेकिन हैंड-फ्री की वजह से मैं सुन नहीं पाया।
तो फिर उसने पीछे से मेरी पीठ थपथपाई तो मैंने उसकी तरफ देखा और गाना रोक दिया।
शालू- माई सैल्फ शालू एन्ड यू ?
मैं- नरेन्द्र !

शालू- आप क्या करते हो ?

मैं- अभी-अभी इंटर का पेपर दिया है और आप ?
शालू- वाह… मैंने भी..!
मैं- ये दोनों लड़कियाँ कौन है ?
बाकी की लड़कियों की ओर इशारा करते हुए पूछा।

शालू- ये दोनों मेरी बहनें हैं रिया और पिया..
और दोनों से मेरा परिचय कराया।

तब तक मेरा भाई भी छत पर आ गया और बोला- नरेन्द्र, आओ कहीं घूमने चलें।
तो मैं बोला- भाई हम यहाँ पहली बार आए हैं तो कहाँ घूमने चलें ? कहीं खो गए तो ?
इस पर मेरा भाई बोला- मैं यहाँ दो-तीन बार आ चुका हूँ इसलिए घबराने की कोई बात नहीं।
तो मैंने कहा- तो चलते हैं।
इस पर शालू बोली- हम भी साथ चलेगें।

हमने बुआ से अनुमति ली और हम पाँचों पैदल ही बाजार की तरफ घूमने निकल पड़े।
रास्ते में रिया और पिया मेरे भाई के साथ चल रही थीं और फिर शालू और सबसे पीछे मैं।
थोड़ा आगे चलने पर शालू रुक गई और मुझसे बोली- क्या हुआ.. आप सबसे पीछे क्यों चल रहे हैं ?
तो मैं बोला- बस ऐसे ही..

तो उसने फिर पूछा- नहीं…कुछ तो बात है ?
मैंने कहा- कुछ नहीं बस ऐसे ही।
शालू हँसते हुए- कहीं गर्ल-फ्रैंड की याद तो नहीं आ रही है।
मैं- नहीं… मेरी कोई गर्ल-फ्रैंड नहीं है।
शालू- या आप हमें बताना नहीं चाहते ? प्लीज बताइए ना..!

मैं- आप ही हो, जबसे आप को देखा है आपसे प्यार हो गया है… आई लव यू…!
शालू- चल झूठे!

और इतना कहकर मुस्कराने लगी और अपनी बहनों के पास चली गई।
करीब तीन घंटे बाद घर वापस आने के बाद हम लोग खाना खाकर छत पर सोने चले गए लेकिन मेरी आँखों से नींद कोसों दूर थी। कुछ देर बाद मैं बिस्तर से निकल कर छत की मुंडेर पर जाकर बैठ गया।

करीब दस मिनट बाद शालू मेरे पीछे आई और बोली- यहाँ क्या कर रहे आप? चलिए यहाँ से नहीं तो आप की तबीयत खराब हो जाएगी क्योंकि गाँव मे मच्छर बहुत होते है और काफी बड़े-बड़े भी !
मैंने कहा- खराब हो जाने दो… किसे क्या फर्क पड़ता है…!
शालू- ऐसा क्यों सोचते हो आप?

तो मैंने कहा- और नहीं तो क्या किसे फर्क पड़ता है? अगर किसी को मेरी फिक्र होती तो मैं यहाँ ऐसे न बैठा होता।
शालू- ऐसा क्यों कहते हो, मुझे फर्क पड़ता है, 'आई लव यू' और मेरे गले लग गई।
मैंने उसे शांत कराया और अपने अपने बिस्तर पर सोने चले गए।

अगले दो-तीन दिन हमने खूब मस्ती की और चौथे रोज फूफा ने हमसे और भाई से कहा कि आओ चलें तुम्हारे जीजा के घर चलते हैं। लेकिन मेरी तबीयत खराब होने के कारण मैं वहीं रुक गया।

शाम तक मेरी जान शालू मेरे पास ही बैठी रही और जबरदस्ती मुझे कुछ न कुछ खिलाती रही।
मैंने उससे पूछा- तुमने खाना खाया या नहीं..!

इस पर उसने कहा- आपने खा लिया तो मैंने भी खा लिया।

ऐसे ही दिन भर हम लोग इधर-उधर की बातें करने लगे। बीच-बीच में मैं उसकी टाँग खिचाई भी कर देता था, लेकिन वो कुछ नहीं बोली।
ऐसे ही उसने मुझसे पूछा- क्या तुम मुझसे वाकई प्यार करते हो ?
मैंने कहा- अभी भी कोई शक है ?
शालू- नहीं.. मैं बस ऐसे ही मजाक कर रही थी।

मैं- अच्छा तो अब आप भी मेरी चाहत का मजाक उड़ा रही हैं।
शालू- नहीं बेबी..! आई एम सॉरी..!
मैं- इट्स ओके..!

अभी तक मेरे मन मे उसके प्रति कोई गंदा ख्याल नहीं था, मैं सचमुच उसे दिल से चाहने लगा था और आज भी उसे उतना ही चाहता हूँ। लेकिन रात में वो मेरे बिस्तर के बगल में अपना बिस्तर लगा कर सोई। हम लोग बात करते-करते सो गए।
करीब चार बजे मेरी नींद खुली और मैं बाथरुम चला गया। वहाँ से वापस आया तो देखा शालू सोई हुई थी और उसकी स्कर्ट घुटने से ऊपर तक उठी हुई और उसकी काले रंग की कच्छी दिख रही थी।

यह देखकर मेरा पप्पू पैंट में ही अकड़ गया, मैं वापस बाथरुम में गया और मुट्ठ मारी और वापस आकर शालू के पास बैठकर उसे देखने लगा।
करीब 5 बजे शालू की नींद खुली तो उसने मुझे अपनी तरफ घूरते हुए पाया और पूछा- ऐसे क्या देख रहे हो ?
मैंने कहा- कुछ नहीं सुबह-सुबह अपनी जान को देख रहा था।

इस पर वो बोली- हट बदमाश कहीं के और उठ कर जाने लगी।

तभी मैंने उसका हाथ पकड़ा और अपने पास घसीट लिया।
वो मेरी गोद में गिर गई और बोली- प्लीज छोड़ो मुझे नहीं तो कोई देख लेगा तो बवाल हो जाएगा।
मैंने कहा- सुबह के साढ़े पाँच बज रहे हैं कुछ नहीं होगा।
और इतना कहकर उसे गोद में उठा लिया और चुम्बन करने लगा।

कहानी जारी रहेगी।

कहानी का अगला भाग : जुदाई ने मार डाला-2